पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.11.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-11 कार्तिक-2082 दयानन्दाब्द 201 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.11.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

142वाँ महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

दिल्ली, रविवार 26 अक्टूबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार नई दिल्ली में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 142वाँ बलिदान दिवस समारोह के रूप में आयोजित किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने यज्ञ करवा कर किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे उन्होंने समाज के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी।स्वामी जी स्वदेशी के समर्थक थे उन्होंने कहा कि कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है,उन्होंने पाखंड अन्धविश्वास पर सीधा प्रहार और लोगों के सोचने समझने की दिशा बदल डाली।उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द जी का अजमेर में 30 अक्टूबर 1883 बलिदान हुआ था। निगम पार्षद सुमन त्यागी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के आदर्श आज भी प्रासांगिक हैं उनको जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। समारोह अध्यक्ष सत्यानंद आर्य ने कहा कि धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण हो जाता है व्यक्ति की सोच व निष्ठा बदल जाती हैं।आर्य युवक परिषद् युवा पीढ़ी में संस्कार व देश भक्ति की भावना भरने का काम करता है जो सराहनीय है। आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि यदि वैदिक विचारधारा हमारे जीवन में आ जाये तो हम एक आदर्श जीवन जी सकते हैं। स्वामी दयानंद की शिक्षा आने वाली पीढियां के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी। इस अवसर पर प्रवीन आर्य पिंकी, नरेंद्र आर्य सुमन, देव आर्य, गौरव आर्य, प्रवीण आर्य गाजियाबाद, किरण सहगल आदि के गीतों ने धूम मचा दी। प्रमुख रूप से आर्य नेता एस के छतवाल, पी एस दहिया, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, अरुण आर्य, ओम सपरा, अजय चौधरी, राधा भारद्वाज, अतुल सहगल, अमरनाथ बत्रा, अमर सिंह आर्य, सोहन लाल आर्य, डा प्रमोद सक्सेना, सुभाष शर्मा, डालेश त्यागी आदि उपस्थित थे। 15 कर्मठ महिलाओं को आर्य रत्न से सम्मानित किया गया।

ऋषि 142वें बलिदास दिवस 30 अक्टूबर पर-

भारत भाग्य विधाता ऋषि दयानन्द

— मनमोहन कुमार आर्य

दिनांक ३० अक्टूबर ऋषि दयानन्द (१८२५–१८८३) का आंग्ल तिथि के अनुसार बलिदान दिवस वा पुण्य तिथि है। हिन्दी तिथि के अनुसार यह इस वर्ष २० अक्टूबर को था। ऋषि दयानन्द जी का बलिदान हुए पूरे १४२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस अवधि में उनके अनुयायियों एवं आर्यसमाज ने जो कार्य किये हैं उसमें अनेक सफलतायें हैं और कुछ क्षेत्रों में हम कमजोर भी रहे हैं जिनका निवारण वा समाधान हम नहीं कर पा रहे हैं। ऋषि दयानन्द को हम इसलिये भी स्मरण करते हैं कि उन्होंने हमें असत्य का परिचय कराकर सत्य ज्ञान, सत्य सिद्धान्त, मान्यताओं व जीवन को श्रेष्ठ एवं सफल बनाने वाले कर्तव्यों सहित अनुष्ठानों से परिचित कराया था। एक बार उनके समय के भारत की स्थिति पर विचार कर लेना उचित होगा। प्रथम बात यह है कि ऋषि दयानन्द के कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व देश घोर अविद्या व अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप से देश व विश्व के लोग अपरिचित थे। जब ईश्वर का सत्य स्वरूप ही लोगों को पता नहीं था तो सत्य उपासना भी वह नहीं जान सकते थे। देश भर में अविद्या पर आधारित मिथ्या परम्परायें प्रचलित थीं जिनसे हमारा देश व समाज दिन प्रतिदिन निर्बल व रूग्ण हो रहा था। महर्षि दयानन्द के समय में देश अंग्रेजों का गुलाम था। इससे पूर्व यह यवनों वा मुसलमानों का गुलाम रहा। सबने इसका शोषण किया और अमानवीय अत्याचार करने के साथ धर्मान्तरण किया। इस गुलामी का कारण भी अविद्या ही मुख्य था। इस गुलामी के कारण वैदिक धर्म व संस्कृति मिट रही थी और ईसाईयत का प्रचार व प्रसार हो रहा था। इन विपरीत परिस्थितियों में देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने का दायित्व ऋषि दयानन्द ने अपने ऊपर लिया और प्रथम उपाय के रूप में वेद, धर्म और संस्कृति का प्रचार आरम्भ किया। वह असत्य व मिथ्या मत एवं उनकी मान्यताओं का खण्डन एवं विद्या की बातों, सत्य सिद्धान्तों एवं वैदिक मान्यताओं का मण्डन करते थे। हरिद्वार के कुम्भ के मेले में भी उन्होंने पाखण्डों का खण्डन किया था और हरिद्वार में पांखण्ड खण्डिनी पताका भी फहराई थी। पौराणिक नगरी काशी में जाकर उन्होंने वहां भी पाखण्ड एवं मूर्तिपूजा आदि मिथ्या अवैदिक मान्यताओं का खण्डन किया था। इससे मिथ्या मतों के आचार्यों में खलबली मच गई थी परन्तु सभी मिथ्या मतों के आचार्यों में इतनी योग्यता नहीं थी कि वह सत्य को स्वीकार करें अथवा ऋषि दयानन्द की मान्यताओं को असत्य व वेद विरुद्ध सिद्ध करें। इसका परिणाम सन् १६ नवम्बर, १८६९ को मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ के रूप में सम्मुख आया। पौराणिक आचार्यों के रूप में काशी के शीर्ष लगभग ३० आचार्यों ने अकेले स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ किया। यह सभी आचार्य मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि के समर्थन में वेद का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। काशी शास्त्रार्थ के बाद भी स्वामी दयानन्द जी का प्रचार जारी रहा। वह देश के अनेक राज्यों व नगरों में जाकर वेदों का प्रचार करने लगे। सर्वत्र लोग उनके शिष्य बनने लगे। शिष्यों में अधिक संख्या पठित, शिक्षित व ज्ञानी लोगों की हुआ करती थी। सन् १८७५ के अप्रैल महीने की १० तारीख को लोगों के आग्रह पर स्वामी दयानन्द जी ने मुम्बई नगरी के गिरिगांव मुहल्ले में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य वेद और वेदानुकूल सिद्धान्तों एवं मान्यताओं सहित वैदिक जीवन शैली का प्रचार तथा पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों सहित मिथ्या व अवैदिक सामाजिक परम्पराओं का उन्मूलन करना था। स्वामी दयानन्द जी मनुष्यों के भोजन पर भी ध्यान देते थे। वह शुद्ध अन्न से बने शुद्ध भोजन को करने के ही समर्थक थे। मांसाहार, मदिरापान, अण्डे व मछली आदि का सेवन तथा धूम्रपान आदि को वह धर्म की दृष्टि से अनुचित तथा आत्मा को दूषित करने वाला मानते थे। देश को जातिवाद से मुक्त करने का भी स्वामी जी ने प्रयत्न किया। उन्होंने वैदिक काल में प्रचलित वैदिक वर्णव्यवस्था, जो गुण कर्म व स्वभाव पर आधारित थी, उसके सत्यस्वरूप को देश व समाज के सामने रखा। देश के पतन का मुख्य कारण अज्ञान व अन्धविश्वास अर्थात् अविद्या ही थी। स्वामी जी ने अज्ञानता व अशिक्षा दूर करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया और उस पर विस्तार से चिन्तन प्रस्तुत किया। इसी का परिणाम कालान्तर में गुरुकुल एवं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूलों व कालेजों की स्थापना के रूप में सामने आया। भारत के शिक्षा जगत में यह एक प्रकार की क्रान्ति थी। हमारे पौराणिक भाई नारी शिक्षा का विरोध करते थे। ऋषि दयानन्द ने नारी शिक्षा की वकालत की और बताया कि विवाह गुण, कर्म व स्वभाव की समानता से होता है। अतः नारी का भी पुरुष के समान शिक्षित व विदुषी होना आवश्यक है। नारी यदि शिक्षित होगी तभी उसकी सन्तानें भी शिक्षित व संस्कारित हो सकेंगी। समाज ने ऋषि दयानन्द के इन विचारों को अपनाया जिसका परिणाम हम आज देख रहे हैं कि शिक्षा जगत में नारियों की उपलब्धियां पुरुष वर्ग के समान ही देखने को मिलती हैं। स्वामी दयानन्द जी ने समाज सुधार का जो कार्य किया वह एकांगी न होकर सर्वांगीण था। स्वामी दयानन्द नारी को संस्कारित कर वेद विदुषी बनाना चाहते थे। बहुत सी नारियां वेद विदुषी बनीं और आज भी गुरुकुलों से दीक्षित आचार्यायें गुरुकुलों का संचालन कर रही हैं। इसके विपरीत पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव में विवेक के अभाव में बहुत सी नारियों ने भारतीयता की उपेक्षा कर पाश्चात्य नारी के स्वरूप को ग्रहण कर लिया जहां मनुष्य की भौतिक उन्नति तो कुछ–कुछ होती दिखाई देती हैं परन्तु आध्यात्मिक उन्नति प्रायः शून्य ही रहती है जिसका परिणाम जन्म जन्मान्तरों में दुःख के सिवा कुछ नहीं होता है। यह भी बता दें कि स्वामी दयानन्द जी और उनके अनुयायियों वा आर्यसमाज ने जन्मना जातिवाद को समाप्त करने सहित दलितोद्धार का भी महान कार्य किया है।

अज्ञान व अन्धविश्वास सहित पाखण्डों का खण्डन करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्मना जातिवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अज्ञान व अविद्या के सभी कार्यों का खण्डन किया। स्वामी जी ने विद्या का प्रचार व प्रसार करने के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद–यजुर्वेद का संस्कृत–हिन्दी भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिससे देश में अविद्या का प्रसार कम होकर विद्या का प्रसार न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी हुआ। स्वामी दयानन्द जी ने अविद्या को दूर करने व सर्वत्र वैदिक मान्यताओं के अनुसार समाज व परिवार बनाने के लिये आर्यसमाज की स्थापनायें की। आर्यसमाजों में सर्वत्र साप्ताहिक सत्संग होने लगे जहां प्रातः यज्ञ–अग्निहोत्र, ईश्वर भक्ति के गीत व भजन तथा विद्वानों के ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का प्रचार, समाजोत्थान व देशोत्थान की प्रेरणा, मिथ्या मान्यताओं का खण्डन एवं सत्य सिद्धान्तों का मण्डन व प्रचार होता था। ऋषि दयानन्द ने पूरे विश्व को सर्वोत्तम व श्रेष्ठतम उपासना पद्धति भी दी है या यह कह सकते हैं कि वैदिक काल में योग की रीति से जो उपासना की जाती थी, उसका उन्होंने पुनरुद्धार किया। सन्ध्या में किन मन्त्रों से व किस विधि से उपासना की जाये, इस पर न केवल चारों वेदों के चुने हुए मन्त्रों से संकलित उपासना की विधि बताई अपितु अपने सभी ग्रन्थों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना पर व्यापक रूप से प्रकाश भी डाला।

आध्यात्मिक व सामाजिक जगत के उन्नयन व उत्कर्ष का ऐसा कोई कार्य व उपाय नहीं था जिसका उल्लेख स्वामी दयानन्द जी ने न किया हो व जिसको प्रचलित करने के लिए उन्होंने व उनके अनुयायियों ने कार्य न किया हो। स्वामी दयानन्द जी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य प्राप्ति का उद्घोष अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया था। ऐसा अनुमान है कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के आठवें समुल्लास में अंग्रेजों का विरोध ही उनकी मृत्यु के षडयन्त्र का एक कारण बना था। इसकी विस्तार से चर्चा न कर हम पाठकों से अनुरोध करेंगे कि वह सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास व ग्यारहवें समुल्लास सहित आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहारभानु आदि सभी ग्रन्थों को पढ़े। हिन्दी को देश की व्यवहार व राजकाज की भाषा बनाने और गोवध बन्द करने के लिये भी ऋषि दयानन्द ने अंग्रेजों की गुलामी के दिनों में अग्रणीय भूमिका निभाई थी। जिन दिनों ऋषि दयानन्द यह कार्य कर रहे थे तब गांधी जी बच्चे थे और अन्य बड़े राजनीतिक नेताओं का जन्म भी नहीं हुआ था। देश की आजादी के क्रान्तिकारी व अहिंसक आन्दोलनों में भाग लेने वालों में आर्यसमाज के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक थी। अंग्रेज भी इस तथ्य से परिचित थे और इसी कारण उन्होंने पटियाला के आर्यसमाज व अन्यत्र भी आर्यसमाज के सदस्यों के उत्पीड़न के कार्य किये। देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल आदि ऋषि दयानन्द के समर्पित अनुयायी थे। देश से स्त्री व पुरुषों की अशिक्षा को दूर कर शिक्षा का प्रचार व प्रसार करने में आर्यसमाज की अग्रणीय एवं प्रमुख भूमिका रही है। स्वधर्म एवं स्वसंस्कृति का बोध एवं प्रचार करने में भी आर्यसमाज का प्रमुख एवं सर्वाधिक योगदान है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां स्वामी दयानन्द ने अपना बौद्धिक योगदान न किया हो। स्वामी दयानन्द जी वस्तुतः विश्व गुरु थे। इसके साथ ही वह भारत के निर्माता और भाग्य विधाता भी सिद्ध होते हैं।

ऋषि दयानन्द जी के बलिदान दिवस व पुण्य तिथि पर हम उनकी महान आत्मा को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। आज देश के सामने अनेक चुनौतियां हैं। हम आर्यसमाज के सभी विद्वानों से निवेदन करते हैं कि वह संगठन को मजबूत बनाने में अपना योगदान करें जिससे देश व संसार में सत्यज्ञान वेद का प्रचार होकर अविद्या दूर हो सके और मानव समाज की सभी समस्यायें हल होकर संसार में सुख–शान्ति स्थापित हो सके।

आर्य महिला रत्न 2025 से सम्मानित कर्मठ महिलाएं

विद्योतमा झा जी | लता नारंग जी | सुमन आर्या जी | संगीता वधवा जी | मुकेश देवी जी | आर्या सुनीता गोस्वामी जी

नीरु कपूर जी | मनीषा ग्रोवर जी | रेणुका ठुकराल जी | आशिमा सक्सेना | वीना गुप्ता जी | प्रतीभा सपरा जी | सविता ढींगरा जी

वेदों में वर्णित सूर्य एवं छठ पर्व

—डॉ. विवेक आर्य

आज छठ पर्व है। सूर्योपासना का यह पर्व कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष के चतुर्थी से सप्तमी तिथि तक मनाया जाता है। सूर्यषष्ठी व्रत होने के कारण इसे 'छठ' कहा जाता है। सुख–समृद्धि और मनोवांछित फल देने वाले इस पर्व को पुरुष और महिला समान रूप से मनाते हैं, लेकिन आमतौर पर व्रत करने वालों में महिलाओं की संख्या अधिक होती है। कुछ वर्ष पूर्व तक मुख्य रूप से यह पर्व बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में मनाया जाता था, लेकिन अब यह पर्व पूरे देश में मनाया जाता है। वेदों में सूर्य से सम्बंधित के अनेक मन्त्र आये हैं। आज मानव केवल भौतिक सूर्य की स्तुति कर रहा हैं। जबकि वेदों में सूर्य केवल भौतिक सूर्य के लिए ही प्रयुक्त नहीं हुआ। वेदों में सूर्य ईश्वर, राजा, ज्ञानी विद्वान, परिव्राजक सन्यासी, नवविवाहिता वधु आदि के लिए प्रयुक्त हुआ हैं। इसलिए छठ पर्व को केवल भौतिक सूर्य तक न सीमित करे। वृहद् अर्थों में सूर्य को समझने में सभी का कल्याण हैं। आईये वेद वर्णित सूर्य के कुछ उदहारण अपने ज्ञानवर्धन हेतु पढ़े।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३ ऋग्वेद मण्डल १०/सूक्तं १०.१९०, इस मंत्र में सूर्य भौतिक सूर्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। अर्थ–परमेश्वर ने पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र, विद्युत, पृथिवी, अन्तरिक्ष आदि बनाये। वैसे ही अब बनाये है और आगे भी वैसे ही बनावेगा। इसलिये परमेश्वर के काम विना भूल चूक के होने से सदा एक से ही हुआ करते हैं। जो अल्पज्ञ और जिस का ज्ञान वृद्धि क्षय को प्राप्त होता है उसी के काम में भूल चूक होती है; ईश्वर के काम में नहीं। विश्व राष्ट्र निर्माण हो जाने पर विद्या के प्रकाश बिना वह नष्ट हो जायेगा। इसलिए वेदों में लिखा है कि सूर्य के समान ऐसी विद्या सब पढ़े जो सत्यपरायणता लावे।

यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय वरुणाय सत्यम्। वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन्गृणन्तः॥१॥ ऋग्वेद मण्डल ७/सूक्तं ७.६०

हे मनुष्यों आप सूर्य के समान वर्तमान अविनाशी और न्यायकारी जगदीश्वर की प्रार्थना करो। जैसे ईश्वर ने मित्र और श्रेष्ठजन (वरुण) के लिए यथार्थ ज्ञान का उपदेश दिया है, वैसा ही उपदेश आपको करे।

एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन्। विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥२ ऋग्वेद मण्डल ७/सूक्तं ७.६०, अर्थात वह सूर्य रूपी ईश्वर/विद्वान/ज्ञानी ऋजुमार्ग अर्थात सरल सच्चा मार्ग और वृजिन मार्ग अर्थात पापमार्ग क्या है यह बताने वाला हैं।

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति। इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥५, ऋग्वेद मण्डल ७/सूक्तं ७.६०, विद्या के अधिष्ठता की कृपा से अनृत क्या है और ऋत की वृद्धि कैसे हो। यह जानने वाले अदिति के पुत्र सर्वत्र सत्य का प्रकाश करे।

इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति। प्रव्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन् ॥७॥ ऋग्वेद मण्डल ७/सूक्तं ७.६०, अर्थात जो विद्वान जानते है वे अचेतस को अर्थात अनजानों को ठीक मार्ग पर चलाते हैं। अपने कर्तव्यपालन में कभी झपकी नहीं लेते। राष्ट्र को गहरे अन्धकार में नहीं जाने देते।

उत्सूर्यो बृहदर्चीष्यश्रेत्पुरु विश्वा जनिम मानुषाणामा। समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥१॥ ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्तं ७.६२, अर्थात– वह सूर्य अर्थात विद्वान सत्य का प्रचार करे। विद्वान ज्ञान को इतना आकर्षक बनाकर प्रचार करे कि सब उसकी ओर खींचे चले आवें। धन्य है उन गुरुओं को जिन्होंने ऐसा विद्वान (सूर्य) बनाया।

स सूर्य प्रति पुरो न उद्गा एभि स्तोमेभिरेतशेभिरेवैः। प्र नो मित्राय वरुणाय वोचोऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च ॥२, ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्तं ७.६२, अर्थात यह विद्वान रूपी सूर्य सूर्य के सामने खड़ा होकर उससे आगे निकल जाता है क्यूंकि वह सूर्य बोलता नहीं है, किन्तु यह सूर्य तो सबको अर्थात मित्र,वरुण, अर्यमा और अग्नि उपदेश देता हैं।

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु। सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥ ऋग्वेद मण्डल ७ सूक्तं ७.६२, ज्ञान प्रचारक सूर्य तथा मित्र, वरुण आदि की कृपा से हमारे सब मार्ग सुपथ सुगम हो जावें।

साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ॥१॥ऋग्वेद – मण्डल ७ सूक्तं ७.६३, अर्थात यह सूर्य मनुष्य का सूर्य है। **उद्वेति प्रसवीता जनानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य।, समानं चक्रं पर्याविवृत्सन्यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः ॥२॥,**ऋग्वेद– मण्डल ७ सूक्तं ७.६३, अर्थात इस सूर्य का विशाल झंडा जन जन को उसके कर्त्तव्य का आदेश करता है।

नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ॥४॥, ऋग्वेद – मण्डल ७ सूक्तं ७.६३, अर्थात देव सविता ने जो नियम बनाये हैं उन्हें सूर्य घर–घर तक पहुँचाता है।

अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम्। प्र मायाभिर्मायिना भूतमत्र नरा नृतू जनिमन्यज्ञियानाम् ॥५॥ ऋग्वेद मण्डल ६ सूक्तं ६.६३, अर्थात वे हर सूर्या अर्थात पतिलोक को जाने वाली नवविवाहिता कन्या को पुष्टि पहुँचाकर बड़े प्रसन्न होते हैं तथा सैकड़ों उपाय से उसकी सहायता करते हैं। इस प्रकार से वेदों में सूर्य को भौतिक सूर्य, विद्वान, ज्ञानी, उपदेशक आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया गया हैं। छठ पर्व पर सभी की स्तुति करे। केवल भौतिक सूर्य की स्तुति वेदों की शिक्षा को पूर्ण रूप से पालन नहीं करना हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 745वां वेबिनार सम्पन्न

'दीपावली का संदेश' गोष्ठी सम्पन्न

दीपावली मन के अन्दर प्रकाश करती है –श्रुति सेतिया

सोमवार 6 अक्टूबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'दीपावली का संदेश' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 743 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा कि दीपावली प्रकाश का पर्व है जो मन के अंधेरे को समाप्त करके प्रकाश करती है। यह कार्तिक वदी अमावस्या को मनाया जाता है। लोग इस अंधकार से भरी अमावस्या को प्रकाश में बदलने का भरकस प्रयास करते हैं , क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है। तमसो मा ज्योतिर्गमय, प्रभु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, यही प्रार्थना करते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अंधकार को कही ना रहने दे, न वह हमारे मनो में रहे और न हमारे देश में। इसी प्रकाश की भावना को ले कर प्रतिवर्ष दीपावली का पर्व आता है। इस पर्व पर अगर मनुष्य बाहर के प्रकाश के साथ अपने अंदर भी प्रकाश कर ले तो उसका कल्याण हो सकता है। दीप जलाने का असली उद्देश्य यह है कि हम अपने मन ओर जीवन को सात्विक, निर्मल ओर संयमी बनाएं आर्य समाज के विद्वान दीपावली पर यह संदेश देते है कि व्यक्ति ऋणमुक्त जीवन जिए, व्यसन ओर बुराइयों से दूर रहे। वेद हमें शुद्धि का उपदेश देते हैं, हमें हमारे विचारों, कर्मों ओर व्यवहारों को भी स्वस्छ बनाने का संकल्प लेना चाहिए। ऋषि दयानंद जी के विचारों को जीवन में अपनाओ। दीपावली केवल परिवार तक सीमित नहीं है बल्कि समाज और राष्ट्र की उन्नति का भी प्रतीक है। हम समाज में शिक्षा का दीप जलाएं । नशा, अंधविश्वास और भेदभाव के अंधकार को दूर करेंगे। दीपावली का प्रमुख अनुष्ठान यज्ञ माना गया है। यज्ञ से वातावरण की शुद्धि होती है। यज्ञ दीप ही सबसे बड़ा है जो मनुष्य के जीवन को आलोकित करता है। मुख्य अतिथि रजनी गर्ग ने कहा कि महर्षि दयानन्द का बलिदान दीपावली के दिन ही हुआ था उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों पर सीधा प्रहार किया। अध्यक्ष डॉ कल्पना रस्तोगी ने कहा कि महिलाओं के उत्थान में महर्षि का उल्लेखनीय योगदान रहा. परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए स्वामी जी के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा शोभा बत्रा संतोष धर, कमला हंस सरला बजाज आदि के मधुर भजन हुए।

'माया का भ्रमजाल –कब टूटेगा' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सफ़लता के लिए भ्रमजाल तोड़ना होगा –अतुल सहगल

गाजियाबाद,शुक्रवार 31 अक्टूबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में माया का भ्रम जाल विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 745 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने कहा कि समाज के सामान्य जन के जीवन में इस विषय की महत्ता का विशेष महत्व है। माया शब्द का अशुद्ध अर्थ ही हमें प्रायः बताया जाता है,विशेषतः तथाकथित पौराणिक विद्वानों द्वारा।ऐसा कहा जाता है कि–ब्रह्म सत्य, जगन्मिथ्याश। ऐसे वचन अधिकतर नवीन वेदांतियों के मुख से सुनने को मिलते हैं और इस तथाकथित मिथ्या जगत को माया का नाम दे दिया जाता है। पर वास्तव में माया तो भ्रम का नाम है जो असत्य,अविद्या से उपजता है। इस तथ्य को हम सबके लिए समझना अत्यंत आवश्यक है। वक्ता ने विषय को प्रस्तुत करते हुए कहा कि माया ही हमारे जीवन में दुखों का और हमारी दुर्गति का कारण है।अविद्या जो माया की जननी है,हमें धर्म मार्ग से भटकाती है और हमारे सब दुखों,कष्टों और समस्यायों का कारण बनती है।हमें इसे दूर करना होगा,माया के इस भ्रमजाल को तोड़ना होगा। वक्ता ने माया के विभिन्न सांसारिक कारणों कि चर्चा की और तत्पश्चात अनेक दैनिक जीवन से उधृत भ्रम के उदाहरण विस्तार से सामने रखे। वक्ता ने कहा कि माया के भ्रमजाल को तोड़ने के लिए सत्य को पकड़ना आवश्यक है और इसके लिए शुद्ध ज्ञान,सत्य ज्ञान को ग्रहण करना होगा। उसके लिए हम आर्ष ग्रंथों का अध्ययन करें, विद्वानों से शिक्षा लें, तर्क से काम लें और अपने विवेक को प्रबल बनायें। वक्ता ने विषय के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की और बड़े विस्तार से भ्रम निवारण के उपायों की व्याख्या की। वक्ता ने इस बात पर बल दिया कि भ्रम निवारण के लिए विद्या और तप आवश्यक हैं। इसके लिए जड़ जगत में आसक्ति को भी कम करना होगा और राग से दूर हटना होगा।विवेक बिना वैराग्य नहीं,वैराग्य बिना विज्ञान नहीं और विज्ञान बिना शांति नहीं।आतंरिक शांति की अवस्था में ही विद्या का ग्रहण और वर्धन संभव है। भ्रम निवारण की प्रक्रिया में प्रायः लम्बा समय लगता है और जीवात्मा अनेक खट्टे मीठे अनुभव लेता है। लेकिन जीवात्मा की उन्नति के लिए भ्रमजाल को तो तोड़ना ही होगा। माया के भ्रमजाल में जकड़े रहकर हमारी सर्वांगीण उन्नति में बाधा आती है। हम सही दिशा में प्रयास नहीं करते और हमारी ऊर्जा व्यर्थ जाती है।इसलिए मानव जीवन की सफलता के लिए माया के भ्रमजाल को काटना ही होगा। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री पूजा सलूजा व अध्यक्ष राजश्री यादव ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, शोभा बत्रा, संतोष धर, जनक अरोड़ा, कमला हंस, सरला बजाज, सुधीर बंसल आदि ने मधुर भजन सुनाए।

महर्षि दयानन्द का साहित्यक योगदान विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के ग्रंथों में भव्य भारत के निर्माण की रूपरेखा –डॉ. रामचन्द्र

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द का साहित्यक योगदान विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 745वां वेबीनार था। मुख्य वक्ता डॉ. रामचन्द्र (विभागाध्यक्ष संस्कृत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के गौरव एवं ज्ञान वैभव का पुनरूद्धार किया। उन्होंने वेदों की नई व्याख्या प्रस्तुत की और गत शताब्दियों से वेदों की गलत व्याख्या का खंडन किया। इसके लिए उन्होंने शास्त्रार्थ किये, सहस्त्रों व्याख्यान दिए और आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द का बहुमूल्य योगदान उनके द्वारा रचित साहित्य के माध्यम से भी प्रकट होता है। उनके द्वारा लिखित छोटे–बड़े ग्रंथों की संख्या 50 के लगभग है और उनकी पृष्ठ संख्या 20 हजार से अधिक है। उनके ग्रंथों को मुख्य रूप से सात भागों में विभक्त किया जा सकते हैं–सिद्धांत ग्रंथ, वेद भाष्य ग्रंथ, आध्यात्मिक ग्रंथ, व्याकरण ग्रंथ, दार्शनिक ग्रंथ, मत–मतांतर खंडन ग्रंथ, अन्य साधारण ग्रंथ एवं पत्र तथा विज्ञापन। महर्षि के प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका है।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970